आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2522 • उदयपुर, शनिवार 20 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

संस्थान द्वारा बाल दिवस पर निराश्रित बच्चों का सम्मान

उदयपुर। देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. श्री जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन के उपलक्ष्य में रविवार को नारायण सेवा संस्थान के सेवामहातीर्थ बड़ी परिसर में बाल दिवस धूमधाम से मनाया गया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि बालगृह, आवासीय विद्यालय, नारायण चिल्ड्रन एकेडमी और मानसिक विमंदित गृह में अध्ययनरत लगभग 500 बच्चों की उपस्थिति में भव्य रंगारंग आयोजन सम्पन्न हुआ। समारोह में भंवई नृत्य, कठपुतली नृत्य जैसे कई आयोजन हुए जिसे देखकर दर्शकगण झूम उठे। संस्थापक चेयरमैन कैलाश 'मानव', सहसंस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल एवं निदेशक पलक अग्रवाल ने बच्चों का हौसला आफजाई करते हुए संगीत, नृत्य एवं कविता में श्रेष्ठ प्रस्तुतियाँ देने वाले एवं राज्यस्तरीय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में पदक विजेता बालकों को उपहार देकर सम्मानित किया। अग्रवाल ने कहा यह बाल दिवस निर्धन एवं निराश्रित बच्चों में प्रेरणा भरने के साथ बौद्धिक विकास के द्वार खोलने में कारगर साबित होगा। कार्यक्रम का संचालन रजत जी गौड़ ने किया।

छिटकी जिन्दगी को लगे पंख

रोहित अहिरवार (25) मंडीदीप (भोपाल) में एक आर. ओ. प्लांट में करते हुए माता–पिता सहित 7 सदस्यों के परिवार में जीवन निर्वाह कर रहा था। 4 बहनों में दो का विवाह हो चुका था, जबकि दो की शादी शेष है। माता–पिता रामवती देवी–भैयालाल अहिरवार दोनो ही वृद्ध हैं। पिता परिवार पोषण में मदद के लिए मजदूरी करते हैं। गृहस्थी की गाड़ी ठीक से आगे बढ़ रही थी कि अचानक एक हादसे ने पूरे परिवार को अस्त–व्यस्त कर दिया। फरवरी 2020 की पहली तारीख को रोहित भैरोपुर स्थित घर से मंडीदीप जाने के लिए निकला। भोपाल से मंडीदीप जाने वाले निकटवर्ती स्टेशन पर पहुंचा और प्लेटफॉर्म के निकट खड़ा था। ट्रेन आने में कुछ ही मिनट शेष थे। तभी कोई व्यक्ति दौड़ता हुआ उसके पास से गुजरा और रोहित उसके धक्के से रेलवे ट्रेक पर जा गिरा। संयोगवश तभी ट्रेन धड़धड़ाते हुए आ पहुंची और उसके दोनों पांवों को चपेट में लेते हुए आगे बढ़ गईं दोनों पांव कट चुके थे। उसे तत्काल भोपाल के एक अस्पताल ले जाया गया जहां उसका इलाज चला। दोनों पांव कटने से परिवार पर संकट के बादल छा गए। परिवार आर्थिक संकट का सामना करने लगा। किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह भी दी लेकिन आर्थिक संकट के चलते रोहित के लिए यह नामुमकिन था। ठीक एक साल बाद भोपाल में 22 जनवरी2021 को नारायण सेवा संस्थान की कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगा। प्रचार–प्रसार से रोहित को पता लगने पर वे भी शिविर में पहुंचे, जहां घुटनों से ऊपर तक कृत्रिम पांव बनाकर लगाए गए। रोहित अब चलते है और जल्दी ही उन्हें काम पर लौटने की उम्मीद हैं।

बीदर (कर्नाटक) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 21नवम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान के पन्नालाल हिरालाल कॉलेज परिसर, बीदर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता श्री भगवत जी खुबा (रसायन उर्वरक राज्य मंत्री, भारत सरकार) द्वारा शिविर में 225 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 25, कैलीपर्स माप 12, ट्राईसाईकल 15, व्हीलचेयर 05, वैशाखी 25 जोड़ी तथा ऑपरेशन चयन 08 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री भगवत जी खुबा (रसायन एवं उर्वरक तथा नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा राज्य मंत्री, भारत सरकार), अध्यक्षता श्री राजकुमार जी अग्रवाल (उघोगपति एवं समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि ब्रिजकिशोर जी, श्री आर. जी. अग्रवाल, श्री सत्यभूषण जी जैन (उघोगपति एवं समाजसेवी), शिविर कोडिनेटर बीदर, श्री नाथुसिंह जी (टेक्नीशियन), डॉ. अजमुदीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री महेन्द्र सिंह जी रावत सहायक ने भी सेवायें दी।

सीकर (राजस्थान) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगों को मूलधारा में लाने के लिये उनको ऑपरेशन, कृत्रिम अंग निरूपण तथा सहायक उपकरणों द्वारा नारायण सेवा संस्थान सतत् सहयोग कर रहा है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 24 अक्टूबर 2021 को नारायण सेवा संस्थान द्वारा श्री मदनलाल भीकमचंद बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीकर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता समदृष्टि क्षमता विकास तथा अनुसंधान मंडल, सीकर द्वारा शिविर में 106 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 11, कैलीपर्स माप 28 तथा ऑपरेशन चयन 16 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुबोधानंद जी महाराज (सांसद महोदय,सीकर), अध्यक्षता श्री रतनलाल जी शर्मा (प्रांतीय अध्यक्ष सक्षम), विशिष्ट अतिथि श्रीमति प्रतिभा जी पूर्व सरपंच, श्रीमान राधाकिशन जी (समाजसेवी), श्रीमती सीमा जी सारंग (ए.डी.जे. सीकर),श्री राकेश जी पारीक (प्रधानाचार्य), श्री महेन्द्र जी मिश्रा(सक्षम), शिविर में श्री उत्तम जी (टेक्नीशियन), श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट सहायक ने भी सेवायें दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अद्भुत है यह मानव शरीर

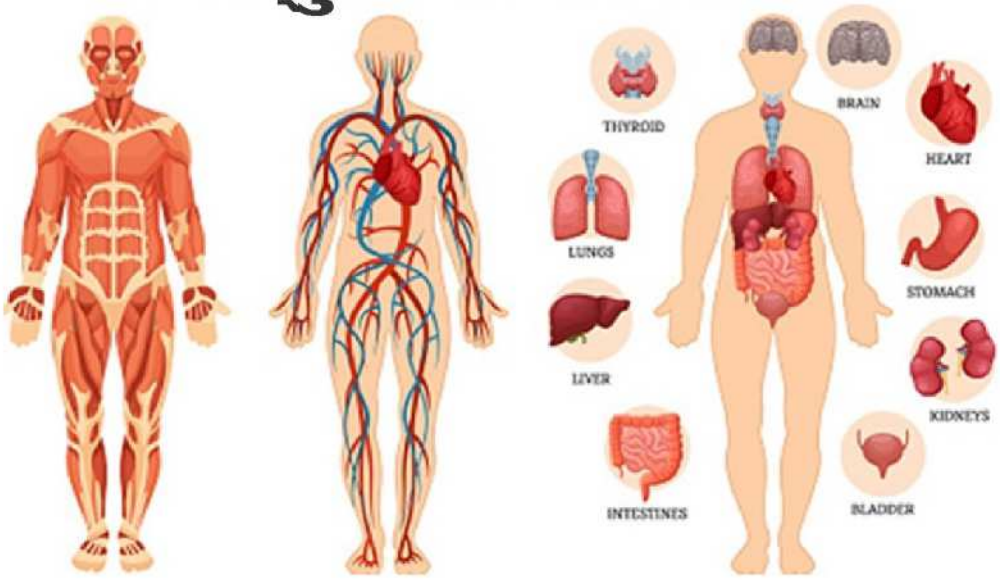

दुनिया के बहुत सारे रहस्यों में से एक रहस्य मानव शरीर भी है। रहस्यों की खान हमारा यह शरीर कैसे कार्य करता है? आइए लेख से जानते हैं। कई बार दिल में ख्याल आता है कि इस शरीर से हम कितने काम लेते हैं। आखिर इस मानव शरीर के अंदर है क्या ? आइए जानें ऐसे ही सवालों के जवाब। शरीर में समस्त ऊर्जा का आधा भाग केवल सिर के द्वारा खर्च होता है।

स्वयं सांस रोककर रखने से किसी मनुष्य की मौत नहीं होती। मानव शरीर में आंख की पुतली का आकार जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत एक जैसा रहता है।

हम एक दिन में लगभग 20 हजार बार पलकें झपकाते हैं। दो सेकंड में आने जाने वाली छींक को नाक तक पहुंचने में 160 किमी प्रति घंटे का सफर तय करना पड़ता है। इसकी रफ्तार एक भागती हुई ट्रेन की गति के बराबर होती है। एक निरोगी मनुष्य के शरीर से लगभग सवा लीटर पसीना प्रतिदिन निकलकर हवा में उड़ जाता है। जब हम सोते हैं तो हम पूरे समय गहरी नींद में होते हैं, पर ये सच नहीं है। 8 घंटे की नींद में 60 प्रतिशत तो हम कच्ची नींद में होते हैं। 18 प्रतिशत गहरी नींद लेते हैं, तो 20 प्रतिशत सपने देखने में निकाल देते हैं।

साबित हो चुका है कि सोते वक्त हमारा दिमाग टीवी देखने की तुलना में ज्यादा सक्रिय होता है। हमारा दायां फेफड़ा बाएं फेफड़े से बड़ा होता है। ऐसा दिल के स्थान और आकार के कारण होता है। एक सामान्य व्यक्ति अपने साठ वर्ष के जीवनकाल में करीब एक लाख किलोमीटर पैदल चल लेता है। मनुष्य एक सांस में 500 मिलीमीटर हवा खींच सकता है।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

होश में रहते हुए मान और अपमान को एक समान समझे तब तो ठीक है, लेकिन उनकी गलत नस दब गई, कट गई।

दया करे जो सब जीवों पर,
ईश्वर को वो भाये।
दान वही करता जो जग में,
परहित को अपनाये।।
बेबस पीड़ित वंचितजन के
आँसू आज बिठाए।
हारे हुए दिव्यांगों को चलाये,
दान, दया अपनाना।।
भावक्रांति के पथ पर
चलकर प्रेम के फूल खिलाना।
दया अपनाना .....।।

बाबू मैं क्यों आता हूँ आपके पास में ? आपके कहोगे नारायण सेवा के लिये आते हो। नारायण सेवा तो आपकी संस्था है। आपकी इच्छा हो जितना दान भेजना। आपकी इच्छा हो तो बाद में भेजना। आपकी इच्छा हो तो अभी भेजना। आपकी इच्छा हो तो प्रेरणा देना। आपकी इच्छा हो तो दूसरों को निवेदन करना। आपकी इच्छा हो तो पधार कर आना। पधारने के लिये तो बार–बार निवेदन है। दान के लिये , मेरा दबाव भी क्या पड़े ?

देनहार कोउ और है,
भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं,
याते नीचे नैन।।

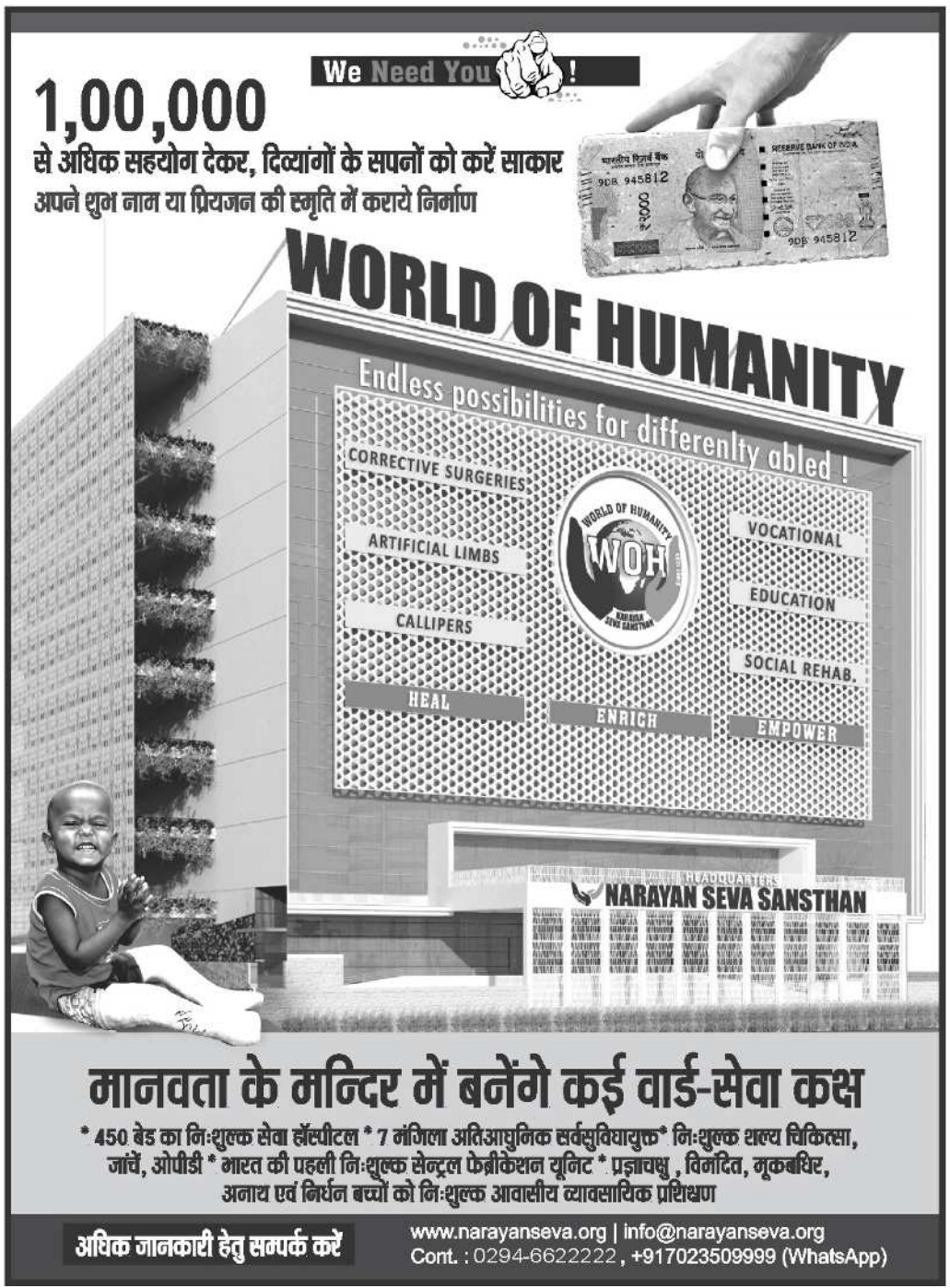

सम्पादकीय

कहा जाता है कि 'संतोषी नर सदा सुखी, अंत लोभी महा दुःखी।' इसका सामान्य सा अर्थ है कि संतोषी वृत्ति का है वह सुखी रहता है व जो असंतोषी है वह दुःखी। किन्तु संतोषी कौन ? असंतोषी कौन ? जीवन में संतोष क्या ? असंतोष क्या है ? ठीक से विचार करें तो संतोष को सबसे बड़ा धन भी कहा जाता है। किसी कवि ने लिखा भी है –

गोधन, गजधन, बाजीधन,
और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन,
सब धन धूरि समान।।

यह संतोष ही है जो हमें किसी एक सीमा पर पहुँच कर सोचने को विवश करता है कि अब कितना दौड़ूंगा ? सच तो यह है कि इस दौड़ का कोई अंत नहीं है।

दुनियां में और सब दौड़ों का अंतिम बिन्दु होता है पर असंतुष्ट व्यक्ति कहीं भी, किसी भी बिन्दु पर रुकना नहीं चाहता। उसे अनंत व अतृप्त क्षुधा व्याप जाती है। उसकी तृप्ति के लिये वह उचित–अनुचित का विचार भी नहीं कर पाता, तब समाज में विसंगतियों का दौर प्रारंभ होता है। असंतोष की ज्वाला बड़ी भयावह है, अतः संतोष धारण करके ही मानवता को, संबंधों को, स्वयं को बचाया जा सकता है।

कुछ काव्यमय

धीरज से उपजा संतोष
मानव को संस्कारी बनाता है।
संतोष फलित होकर हरेक को
सदाचारी बनाता है।
यह वह बीज है जो
मीठे फल देता है।
सारी व्यग्रताएं, सारी ऐषणायें
जड़मूल से हर लेता है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

प्राप्त का आनंद

ये वाणी और कर्म तो भाइयों–बहनों भावों की संतान है। भावों का बाह्य रूपान्तरण है। प्रातःकाल उठते ही शय्या को प्रणाम किया करें। प्रातःकाल उठते ही प्रसन्न हो जाया करें। मन में मुस्करा लिया करें। मैं तो मुस्कराता हूँ। पहले दो–चार, दस दिन तो ऊपर से मुस्कराता था, अब बाद में कोई बात ऐसी याद आ जाती है। मुस्कराने के हजारों कारण हैं, रोने के एक–दो कारण हैं। पर हम लोग तो कमल के पुष्प है सुगन्धी नहीं लेते है। अरे ये छोटा हो गया, ये पुष्प बड़ा हो गया। अरे, इससे बड़े तो बाजार में मिलते है। काहे को भैया, ये जो है इसका आनन्द लो। इसका परमानंद प्राप्त करो। आनन्द है, परमानंद है। भगवान श्रीरामजी ने जब देखा, मेरी माता है। कैकेयी ने बहुत पछतावा किया। थूके मुझ पर त्रिलोक्य भले ही थूके, कोई जो कह सके, कहे क्यों चूके। इतना बार–बार पछता रही है। श्रीराम को लगा, मेरी माँ है। भरतजी ने इनकी कोख से जन्म लिया है। मेरी माँ का अपमान, माँ की गर्दन नीचे नहीं देख सकता। इतिहास में अमर हो गयी पंक्तिया। सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।

जिस जननी ने,
जना भरत सा भाई।
पागल सी प्रभु के साथ,
सभा चिल्लाई।

सौ बार धन्य है और जो जनता जनार्दन कैकेयी की तरफ अपमान की निगाहों से देख रही थी, उन्होंने गर्दन झुका ली। कैकेयी को भी प्रणाम किया। ये भरतजी की माता है। ये प्रेम की मूर्ति की माता है, ये आनन्द के भावों की माता है, ये वाणी के आनन्द की माता है,

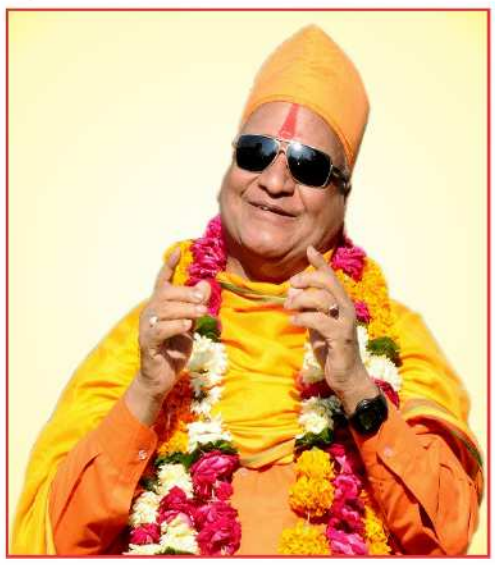

ये प्रेम की माता है। ये भरतजी की माता है। कैकेयीजी को क्षमा कर दिया। लोगों ने क्षमा कर दिया। और प्रभु के साथ लोगों ने भी कहा–

सौ बार धन्य है
एक लाल की माई,
जिस जननी ने,
जना भरत सा भाई।

भगवान श्रीराम ने कहा– भरत तुम बोलो। तुम बोलोगे, मैं कर लूंगा। लेकिन पिताजी ने आज्ञा दी थी चौदह साल में वनवास रहूँ। तुम कहोगे तो, रोओ मत। तुम्हारे आँखों के आँसूं नहीं देख सकता।

हर आँख यहाँ यूं तो बहुत रोती है,
हर बूंद मगर अश्क नहीं होती है।
पर देखकर जो रो दे जमाने का गम,
उस आँख से आँसू गिरे वो मोती है।।

राम ने कहा– भरत आँख के आँसू पौंछ लीजिये। अपने उत्तरी से, अपने दुपट्टे से भरत की आँखों के आँसू। बोल भाई बोल। तूं कहेगा जो कर लूंगा, तूं धर्ममय है। भरतजी ने सोचा– अब तो मेरे को कह दिया। तुम कहोगे जो कर लूंगा। भरतजी के मन में हजारों प्रकार के प्रश्न– उत्तर आने लगे। हम तीनों भाई वन को चले जावे। रामजी और भाभीजी सीताजी अयोध्या लौट आवे। मैं और शत्रुधन वन को चले जावे। राम, लक्ष्मण अयोध्या लौट जावें। सोचा– अब तो सब भार मेरे पर ही रख दिया। कैकेयी फिर बीच में बोली– मैंने ही वरदान लिये थे। मैं वरदान को वापिस लेती हूँ। लौट चलो घर भैया, अपराधिन मैं हूँ तात तुम्हारी मैया। राम भगवान ने कहा।

पहले वो आदेश प्रथम हो पूरा, कि जिनके लिये प्राण उन्होंने त्यागे। मैं भी अपना व्रत नियम निभाँऊ आगे। भरत कहेगा वो कर लेंगे। भरतजी मौन हो गये। सीताजी अपनी माताजी से मिलने
गयी है। सुनयनाजी ने कंठ से लगा लिया। अमर हो गयी वो वाणी। जो उन्होंने कभी कहा था– पुत्री पवित्र किये कुल दोऊँ। हे!

जानकी, हे! वैदेही, हे! सीते तुमने तुम्हारे पीहर के कुल को, जनकजी के कुल को भी पवित्र कर दिया। हमारी ऐसी बेटी चाहती तो पीहर आ सकती थी। चाहती तो अयोध्या में रह सकती थी– मैं जनकपुरी जाऊंगी। मैं अपने माता– पिता के पास चौदह साल रहूंगी। जब राम भगवान अयोध्या में लोटेंगे तो मैं भी वापिस आ जाऊंगी, लेकिन नहीं कहा। यही कहा।

सुख में आ आ के घेरूं।
संकट में कैसे मुँह फेरूं।।
देखेगा तो कौन किसे।
मरना होगा मौन जिसे।।

भरतजी, भरतजी जैसे राम भगवान को ढूंढने आये। सीतामाता तो रामभगवान के साथ ही पधार गयी। सुनयनाजी ने गले से लगा लिया।

–कैलाश 'मानव'

कार्य के प्रति निष्ठा

टोडरमल एक प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उत्कृष्ट लेखन के धनी इन साहित्यकार में अपने काम के प्रति अद्भुत लगन थी। वे जिस भी विषय पर लिखना तय कर लेते थे, उसे एक बार हाथ में लेने पर पूरा करके ही छोड़ते थे। एक समय वे अपने ग्रंथ 'मोक्षमार्ग' पर काम कर रहे थे। यह विख्यात ग्रंथ है और आज भी

बहुसंख्यक लोगों के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है। जब टोडरमल के मस्तिष्क में मोक्षमार्ग लिखने का विचार आया तो उसके लिए उन्होंने अनेक लोगों से सामग्री जुटानी आरम्भ की। टोडरमल अपने काम में इतने डूब गए कि उन्हें रात और दिन का भान ही नहीं रहा और न खाने–पीने की सुध रही। घर के लोग उनका ध्यान रखते और वे अपना ग्रंथ लिखते रहते।

एक दिन टोडरमल अपनी माँ से बोले, "माँ ! आज सब्जी में नमक नहीं है। लगता है आप नमक डालना भूल गईं।" उनकी बात सुनकर माँ मुसकराते हुए बोली, "बेटा ! लगता है आज तुमने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया है ?" माँ की बात सुनकर टोडरमल चौंके और हैरानी से बोले, "हाँ माँ, मैंने अपना ग्रंथ पूरा कर लिया है, लेकिन आपको कैसे पता चला?"

माँ ने जवाब दिया, "बेटा ! नमक तो मैं तुम्हारे भोजन में पिछले छः महीने से नहीं डाल रही थी, किन्तु उसका अभाव तुम्हें आज पहली बार महसूस हुआ है। इसी से मैंने जाना। जब तक तुम्हारे मस्तिष्क में पुस्तक की विषय –सामग्री थी, तब तक नमक जैसी वस्तुओं के लिए स्थान नहीं था। अब जब वह जगह खाली हो गई, तो इन्द्रियों के रसों ने उसे भरना शुरू कर दिया।"

दरअसल, कार्य के प्रति लगन और निष्ठा हो तो कार्य उत्कृष्टता के साथ पूरा होता है। इसलिए जब भी कोई कार्य हाथ में लें तो उसे पूरी लगन के साथ करें। सफलता ट्रेन की तरह होती है। इसमें कड़ी मेहनत, ध्यान केन्द्रित करने, भाग्य व दूरदर्शिता के कई डिब्बे होते हैं, और इन डिब्बों को आत्मविश्वास का इंजन खींचता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

तीन दिन गुजरे कि मुम्बई से समाचार आया कि चैनराज को हार्ट अटेक आया है और उन्हें अस्पताल भर्ती कराया गया है। कैलाश के लिये यह खबर किसी वज्राघात से कम नहीं थी। कैलाश सब काम छोड़ मुम्बई रवाना हुआ। खबर शाम 6 बजे आई थी, मुम्बई की उड़ान में अभी वक्त था मगर उसे टिकिट नहीं मिला। वेटिंग सूची भी 28 पर चल रही थी। वह एयरपोर्ट पहुँचा। तब इण्डियन एयर लाइन्स की उड़ानें ही चलती थी।

संयोग से कैलाश को अच्छी तरह जानने वाले अधिकारी ही मिल गये। उन्होंने सारी बात सुनकर कैलाश को तुरंत कन्फर्म टिकिट जारी कर दिया। इतनी वेटिंग सूची होने के बाद भी इतनी आसानी से टिकिट दे दिया तो एयरलाइन्स के ही एक सहायक ने टिकिट देने वाले अधिकारी को कहा कि लोग विरोध करेंगे बिना बात हंगामा मचेगा तो संभालना मुश्किल हो जाएगा। अधिकारी ने अविचलित होते हुए कहा–कोई बात नहीं, जो होगा देखा जाएगा। आज के जमाने में मुम्बई का एक व्यक्ति उदयपुर में दिव्यांगों के लिये हॉस्पीटल बना रहा है, वह अगर मुसीबत में है तो इन्हें भेजना ही पड़ेगा। कैलाश अधिकारी के इन भावों को देख उनके समक्ष नतमस्तक हो गया।

हवाई अड्डे पर किसी ने उफ तक नहीं की। कैलाश ने आसानी से उड़ान पकड़ी और मुम्बई पहुँच गया। चैनराज को हरकिशनदास अस्पताल में भर्ती कराया गया था। हवाई अड्डे से वह सीधे अस्पताल ही पहुँचा। चैनराज आई.सी.यू.में भर्ती थे। डॉक्टर व बच्चे उसे लेकर चैनराज के पास पहुंचे। कैलाश के देखते ही चैनराज की आंखों में चमक आ गई। कैलाश भी उनकी ऐसी हालत देख व्यथित हो गया। अभी तीन दिन पहले ही तो दोनों खुशी खुशी चेन्नई रह कर आये थे। इतनी जल्दी ऐसा कुछ हो जायेगा किसी को कल्पना भी नहीं थी।

अंश - 162

डेंगू में ध्यान रखें

डेंगू के मामले बढ़ रहे हैं। मच्छर एडीज इजिप्टाइ से होने वाली यह बीमारी वायरस जनित है। यह गंभीर रोग है जिसकी जटिलता बढ़ने पर व्यक्ति की मृत्यु तक हो सकती हैं। इसके लिए जरूरी है कि इस बीमारी की जटिलताओं के बारे में जानें और डेंगू से डरें नहीं, बल्कि रोग के लक्षणों को समझें। इसके प्रति जागरूक बनें।

रक्तस्राव हो तो .....

इस बीमारी की गंभीरता प्लेटलेट्स कम होने से शुरू होती है। प्लेटलेट्स 20 हजार से कम होती हैं तो स्थिति गंभीर मानी जाती है। इस दौरान ध्यान रखें कि अगर नाक, मुंह, यूरिन और स्टूल से रक्तस्त्राव हो रहा है तो तुरंत डॉक्टर से सम्पर्क करें।

बढ़ते–घटने का क्रम देखें

इस रोग में गंभीरता की पहचान करने का एक और लक्षण है, प्लेटलेट्स का घटना व बढ़ना, अध्ययनों में देखा गया है कि पांच दिन तक लगातार प्लेटलेट्स कम होते हैं और छठे दिन से बढ़ना शुरू हो जाते हैं। दरअसल, शरीर खुद प्लेटलेट्स बनाना शुरू कर देता है, इसलिए बढने–घटने के ट्रेंड को देखना भी बहुत जरूरी है।

प्लेटलेट्स कम हो तो .....

पांच दिन से अधिक बुखार हो और प्लेटलेट्स कम होने लगें तो ध्यान दें। सामान्य मरीज 7से 10दिन में ठीक हो जाते हैं। क्रॉस रिएक्शन की आशंका अधिक होने से पेन किलर्स की आशंका अधिक होने से पेन किलर्स का उपयोग बिल्कुल न करें। ये किडनी को डैमेज करती हैं और प्लेटलेट्स कम हो जाती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

उचित आश्वासन न मिलता देख उन्होंने धरना दिया व अनशन भी किया। परिणाम स्वरूप हिन्दी भाषा के शोधपत्र को विश्वविद्यालय ने मान्यता दी। इसी कारण मेरी डॉ. लोहिया जी के प्रति श्रद्धा बढ़ गई थी। मैं स्वयं हिन्दी का प्रबल पक्षधर हूँ। मैंने हिन्दी साहित्य की अनेक अमर कृतियों को पढ़ा है तथा पाया है कि उनमें भारत की आत्मा बसती है। इस बनेड़ा प्रवास में डॉ. लोहिया जी की एक बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। जब शाम का भोजन हो गया था तो अंधेरा हो चुका था। कुछ वर्षा होने के कारण थोड़ा कीचड़ भी हो गया था। उस समय बनेड़ा में बिजली नहीं आई थी। लालटेन आदि ही प्रकाश के साधन थे। भोजन घर के आगे के भाग में था व रसोईघर ठेठ पीछे था, बीच में बड़ा सा कच्चा चौकथा। भोजनोपरांत डॉ. लोहियाजी बोले– मुझे रसोई घर में ले चलो, मैं रसोई बनाने वाली माता–बहनों को धन्यवाद कहना चाहता हूँ। उन्हें बताया गया कि रसोईघर दूर है, बीच में अंधेराव कीचड़ है पर उनका आग्रह चलता रहा। वे एक लालटेन के प्रकाश के सहारे कीचड़ में चलते हुए रसोई तक गये और स्वादिष्ट भोजन के लिये धन्यवाद दिया। मेरे लिये यह घटना एक आदर्श पाठ थी। मैं जीवन में अनेक व्यक्तियों से मिला हूँ। हो सकता है कि मेरी विचारधारा का मेल उनसे पूरा का पूरा न रहा हो पर मेरे पूज्य बापूजी ने मुझे सिखाया था कि जो अपने लिये उपयुक्त है वह सीख कहीं से भी मिले लेनी चाहिए– इसलिये मेरा इस पद में विश्वास है –

साधु ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार–सार को गही रहे, थोथा देहि उड़ाय।।
सेवा ईश्वरीय उपहार– 289 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य

120 कथाएं

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023